International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 3, Issue 1, pp: 162-164 www.ijemh.com

मनुस्मृति आधुनिक समाज में प्रासंगिकता

मृदुला गौड़
शोधार्थी

Date of Submission: 13-02-2022 Date of Acceptance: 28-02-2022

आज कल विश्व में अधिकांश लोग भारतीय ग्रंथोंए पुराणों, वेदो आदि का अध्ययन कर रहे हैंए हमारी संस्कृति का योग कोए आयुर्वेद को अपना रहे है, ऐसे समय में हम खुद का कहा पाते है क्या हमारा जुड़ाव भी हमारे पौराणिक ग्रन्थों से उतना ही जितना कि हम पाश्चात्य संस्कृति से जुड़ रहे हैं।

आज तक कई बार इस ज्वलंत विषय की ओर कई लोगों ने हमारा ध्यान खींचा मगर हम अपनी आँखों पर अज्ञानता और अनिच्छा की पट्टी बांधे रहे।

आधुनिक काल में शायद भारत में मात्र कुछ शिक्षाविदों कोए शोधार्थियों को, कुछ लेखको को और कुछ संस्थाओं को (जैसे - आर्य समाज) को छोड़ कर शायद ही कोई वेद, पुराण व स्मृतियों का अध्ययन करता होगा। हां शायद ब्राह्ाणवर्ग द्वारा भी कर्मकाण्ड के लिए धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन, पठन पाठन किया जाता होगा। परन्तु इतना पर्याप्त नहीं है।

क्या आप जानते है कि यदि किसी राष्ट्र को समाप्त करना हो तो उसकी साहित्यिक धरोहर को नष्ट करना, उसकी सम्पूर्ण सभ्यता को नष्ट करने के बराबर है। साहित्यिक धरोहर को नष्ट करने से वह राष्ट्र पतन की ओर मोड़ जाता है।

ऐसा ही कुछ हमारे देश में विदेशी आक्रांताओं ने किया। उन्होने हमारी धरोहरोए स्मृतियो आदि के साथ छेड़छाड़ की और उन्हें कुत्सित बनाया जिससे हम ऐसे समाज की ओर बढे जिसमें जाति, उपजाति, कुल गोत्र और न जाने कितने विभाजनों को शामिल किया गया।

इसका जीता जागता उदाहरण है मनुस्मृति। इसकी कालगणना लगभग सृष्टि में सभ्यता की शुरूआत के समय की है शायद 10 या 12 हजार साल पहले चारों युगों से पहले सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर, कलियुग से भी पहले, जबकि मनुष्य लिखना भी नहंी जानता था।

तभी इस महान ग्रंथ की मूल प्रति आज तक उपलब्ध नहीं है। इसलिए इसका

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 3, Issue 1, pp: 162-164 www.ijemh.com

नाम भी स्मृति है। मनुस्मृति इन्ही में से एक है।

मनुस्मृति को पिछले कुछ दशकों में लगातार समाज में प्रतिरोध व प्रतिकार झेलना पड़ रहा है। महात्मा ज्योतिबा फुले व डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर तक इसका विरोध कर चुके है।

यहां तक कि कुछ वर्षों पहले इसकी कुछ प्रतियों को फिर से जलाकर विरोध प्रदर्शन किया गया था।

मगर यह सब कहा तक सैद्वान्तिक है क्या समाज में बुद्धिजीवी वर्ग को इस पर पुनर्समीक्षा नहीं करनी चाहिए।

क्यु मनुस्मृति में एक तरफ कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था का वर्णन होने पर भी यह किस तरह जाति प्रथा का समर्थन कर सकती है।

मनुस्मृति में कहा गया है कि जिस स्थान पर स्त्री का सम्मान होता है वही पर धन, सम्पति रहती है अर्थात् स्त्री सम्मान समाज में सर्वोपरि है तो कैसे यही स्मृति स्त्री का एक वस्तु के तुल्य समझ सकती है। कैसे इसमें स्त्री को पुरूष के अधीन कहा गया हो सकता है।

यह पुस्तक धर्म शास्त्र न होकर जीवन प्रणाली है जो कि मनुष्य को एक सिद्ध, शुद्ध, जीवन जीत की कला का ज्ञान देती है।

अतः आज आवश्यकता है कि फिर से हम मूल्यांकन करें चूक कहा है हमारे साहित्य में या हमारी समझ में।

मनुस्मृति एक ऐसा ग्रन्थ है जो हर वर्ग के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है ब्राह्ाण समाज ने इन ग्रन्थों का उपयोग कर्मकाण्डों व अन्य धार्मिक अनुष्ठानों तक ही सीमित रखा।

किसी राष्ट्र की गरीमा उसका इतिहास हैं, साहित्य है, और जब भी हम भारतीय साहित्य की बात करते है तो अनन्य ग्रन्थों का स्मरण होता है यथा वेद न पुराण स्मृति में इनमे से सबसे प्राचीन स्मृतियों को माना जाता है। स्मृति ग्रन्थ का तात्पर्य ही है कि ऐसा ग्रन्थ जो लिखित में होकर स्मृति पर आधारित हो। मनुस्मृति एक ऐसा ही ग्रन्थ हैं इसकी प्राचीनता का ज्ञान तो इसी से हो जाता है, रामायण, महाभारत जैसे ग्रन्थों में इसका उदाहरण मिलता है। वेद सबसे प्राचीन लिखित ग्रन्थों में शामिल है एवं ऐसे प्रमाण है कि मनुस्मृति की रचना मनु ने ही कि है तो यह स्वतः सिद्ध होता है कि मनुस्मृति वेदों से पहले रचित ग्रन्थ है।

आज तक मनुस्मृति को हमारे देश व धर्म में ही मान्यता नहीं मिल सकी है। मनुस्मृति की लिखित एवं प्रतिलिपि उपलब्ध न हो सकने के कारण यह आज तक बाह्य कारकों द्वारा प्रक्षेपित होती रही है। मनुस्मृति को शायद ही सभी लोगो ने पढ़ा हो शायद 25 प्रतिशत या 30 प्रतिशत लोगों ने पढ़ा हो ।

International Journal of Engineering, Management and Humanities (IJEMH)
Volume 3, Issue 1, pp: 162-164 www.ijemh.com

यहां मनुस्मृति को जो थोड़ी बहुत पहचान मिली भी हैं तो वह ब्रिटिश हुक्मरानों के कारण।

हमारे देश ब्रिटिश अफसरों ने विधि की रचना से पहले मनुस्मृति का अध्ययन व अनुवाद किया एवं इसके आधार पर संविधान / कानून / विधि का निर्माण किया।

भारत में मनुस्मृति का सर्वप्रथम मुद्रण (प्रकाशन) 1813 ई. में कलकत्ता में हुआ था।

मनुस्मृति में वेदो का सारांश है। वेदों में जो बातें सविस्तार बताई गई है वहीं सब कुछ सारांश में मनुस्मृति में मिलता है।

मनुस्मृति मनुष्य के जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त तक हर अवस्था में लगभग हर क्षेत्र से सम्बंधित व्यवस्था का विवरण देता है।

अब तक हुए अनुसंधानों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मनुस्मृति न सिर्फ धर्म बल्कि जीवन की व्यवस्था देता है इसलिए इसे मानव संविधान की संज्ञा दी गई है। मनुस्मृति का जिन भी विद्वानों का समागम है इसमें धर्म, मानव, मूल्य वर्ण व्यवस्था, रीति नीति, अर्थ, दण्ड, राजनीति, लैंगिक समानता कर, अर्थशास्त्र, जैव विविधता, पर्यावरण शहर की भौगोलिक व्यवस्था सुरक्षा जैसी सभी विषयों का समावेश है।

परन्तु हमारे ही देश में इसे वह महत्व नहीं मिल सका अपितु यह तिरस्कार एवं बहिष्कार का ही शिकार हुई है। बल्कि इसको लेकर मतभेद भी हुए है। इन सभी विवादों, मतभेदों का कारण मेरे विचार से मनुस्मृति की गलत छवि है। आज जो मनुस्मृति हम पढ़ व समझ रहे हैं यदि उसका गहन अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि इसमें जो श्लोक है वे परस्पर विरोधाभासी है जिनके अर्थ पूर्णतया विपरित संदर्भों से निकलते है और एक ही व्यक्ति एक ही रचना में परस्पर विरोधी बातें कैसे लिख सकता है। तो इससे यह सिद्ध होता हैं कि जो श्लोक, अन्य से भिन्न अर्थ रखते है वे प्रेक्षपित है।

आज की युवा पीढ़ी को यह समझने की जरूरत है कि मनुस्मृति मात्र एक धर्मग्रन्थ नही ंके जो कर्मकाण्डों पर आधारित नहीं हैं बल्कि यह सिर्फ प्रक्षेपण है। आज आवश्यकता है हमारे प्राचीन ग्रन्थों के पुनमुल्यांकन भी। जिससे मनुस्मृति को समाज में सही स्थान मिल सके।